'वात्सल्य '

कवि परिचय

सूरदास

सूरदास हिन्दी काव्य-जगत के सूर्य माने जाते हैं। कृष्ण भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित करने में उनका विशेष योगदान है। महात्मा सूरदास का जन्म संवत् 1535 में मथुरा के निकट रूनकता या दिल्ली के निकट सीही ग्राम के ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे जन्मान्ध थे। उनका कण्ठ बड़ा मधुर था। गुरु वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने के बाद वे पुष्टि मार्ग में दीक्षित हुए। उन्हीं की प्रेरणा से सूरदास ने दास्य एवं दैन्य भाव के पदों की रचना छोड़कर वात्सल्य, माधुर्य और सख्य भाव के पदों की रचना करना आरम्भ किया। पुष्टि मार्ग के अष्टछाप भक्त कवियों में सूरदास अग्रगण्य थे। सूरदासजी ने भक्ति, काव्य और संगीत की त्रिवेणी बहाकर भक्तों, संगीतकारों और साधारणजनों के मन को रस सिक्त कर दिया था। उनका निधन संवत् 1638 में पारसोली नामक ग्राम में हुआ।

सूरदास के तीन ग्रन्थ बताए जाते हैं- सूरसागर, सारावली, साहित्य लहरी इनमें से सूरसागर ही उनकी अमरकृति हैं।

सूरदासजी उच्च कोटि के कृष्ण भक्त थे। सूरसागर में सख्य भाव के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रेम निरूपण सूर की काव्य साधना का मुख्य ध्येय है। सूरदासजी ने विनय, वात्सल्य और शृंगार तीनों प्रकार के पदों की रचना की थी। उन्होंने संयोग और वियोग दोनों प्रकार के पद रचे। सूरसागर का 'भ्रमर गीत प्रसंग' वियोग शृंगार का श्रेष्ठ उदाहरण है। सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। बाल रूप के चित्रण में उन्होंने कोना-कोना छान मारा है। आगे चलकर कृष्ण और राधा का प्रेम लरिकाई के रूप में

मनुष्य जीवन में बचपन का महत्वपूर्ण स्थान है। बचपन का लीला-भाव गृहस्थी को आसक्ति पूर्ण बनाता है। मनुष्य के भीतर यदि थोड़ा सा बचपन बचा रहता है तो हमारा संसार अधिक आकर्षक और अधिक शोभामय बना रहेगा। काव्य में बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए कवि ने बालक के मनोभावों के साथ-साथ उसकी चेष्टाओं का विस्तार से विवेचन किया है। शिशु क्रीड़ाओं से मुग्ध माता-पिता जिस भाव से अभिभूत होते हैं, उसे ही वात्सल्य कहा गया है। भक्ति काल में वात्सल्य वर्णन की लंबी परंपरा प्राप्त होती है। प्राय: कृष्ण और राम के बचपन को केन्द्र बनाकर उनकी बाल-लीलाओं का चित्रण भक्त कवियों ने अनेक तरह से किया है। भक्ति काल में जीवन की मार्मिक व्यंजना के प्रसंग में वात्सल्य को व्यक्त करने वाले कवियों ने बाल मनोविज्ञान को सूक्ष्मता के साथ अनुभव किया था।

भक्तिकाल के अंतर्गत वात्सल्य वर्णन में सूरदास सिद्ध-हस्त कवि माने जाते हैं। प्रस्तुत पदों में उन्होंने श्रीकृष्ण के बालरूप का सौंदर्य चित्रण करते हुए उनके द्वारा किए जाने वाले लीला विनोद का भी वर्णन किया है। घुटनों के बल चलते हाथ में मक्खन लिए बाल कृष्ण की शोभा को एक पल भर निरखने का सुख सबसे बड़ा सुख बन जाता है। बालकृष्ण को उनके पिता नंद कहीं उनकी अंगुली पकड़कर चलना सिखाते हैं तो कहीं कृष्ण बोलने की कोशिश करते है, बालकृष्ण की इन चेष्टाओं को देखकर माता यशोदा आनंद से भर उठती है, भोजन करते हुए कृष्ण की मुद्राओं को देख-देखकर नंद और यशोदा अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं। अपने बालसखाओं के साथ खेलते कृष्ण को बलदाऊ खिझाते हैं इससे कृष्ण रुष्ट हो जाते हैं उनकी इस मुद्रा को निरखकर नंद और यशोदा प्रसन्नता से भर उठते है। बाल लीलाओं का सहज और स्वाभाविक वर्णन इन पदों में हुआ है।

बाल्यकाल मानव जीवन का मूल आधार है। जिसका बचपन 'शुद्ध' उसी का यौवन 'समृद्ध ' और बुढ़ापा 'सिद्ध ' होगा। सूर और स्वामी रामभद्राचार्य गिरिधर के बाल-वर्णन का यही केन्द्रीय भाव है कि बालजीवन कैसा हो? जिस प्रकार सूर ने कृष्ण के वात्सल्य वर्णन द्वारा परिवार के केन्द्र में बालकृष्ण को रखा है वैसे ही स्वामी रामभद्राचार्य गिरिधर ने वात्सल्य के द्वारा राम को परिवार के केन्द्र में रखा है।

प्रकट होता है–''लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे छूटै?''

सूरदास की काव्य भाषा ब्रजभाषा है। लोकोक्ति और मुहावरों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है। उनके पदों में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का समुचित प्रयोग मिलता है। माधुर्य और प्रसाद उसके मुख्य गुण हैं। सूर के सभी पद गेय हैं। उनकी शैली में भी विविधता है। उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। सूरदासजी ने साधारण बोलचाल की भाषा को अपनी सुन्दर भाव-भूमि से सजाया, सँवारा और साहित्यिक रूप दिया है। सूरदास का काव्य गीतिकाव्य है। उन्हें यह गीति-शैली जयदेव, विद्यापति और कबीर से विरासत में मिली हैं। रस के आयोजन में अलंकारों के प्रयोग में और भाषा को सजाने-सँवारने में सूर भावी कवियों के पथ प्रदर्शक हैं।

भक्तिकाल के प्रमुख कवि सूरदास अपनी रचनाओं काव्य कला और साहित्यिक प्रतिभा के कारण निस्सन्देह साहित्याकाश के 'सूर' ही हैं। इन सारी विशेषताओं के कारण यह दोहा अक्षरश: सत्य है–

''सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।

अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकाश॥''

सूर के बालक कृष्ण, नन्द और यशोदा को जहाँ लौकिक और अलौकिक क्रीड़ाओं से आनंदित करते हैं, वहीं गिरिधर के बालक राम अपनी मर्यादित एवं युगोचित बालक्रीड़ा से कौशल्या और दशरथ को ही नहीं पूरे समाज को आनंदित करते हैं। सूर और गिरिधर के कृष्ण और राम हमारी सामाजिक समरसता राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्स्थापना के प्रतीक पुरुष के रूप में चित्रित हैं।

कृष्ण की बाललीलाएँ

(1)

सोभित कर नवनीत लिये ।

घुटुरुवन चलत रेनु मंडित मुख में लेप किये॥

चारू कपोल लोल लोचन छविगौरोचन को तिलक दिये।

लर लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पिये॥

कठुला के वज्र केहरि नख राजत है सखि रुचिर हिये।

धन्य 'सूर' एकौ पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये॥

(2)

गहे अँगुरिया तात की नंद चलन सिखावत।

अरबराई गिरि परत हैं कर टेकि उठावत॥

बार-बार बकि श्याम सों कछु बोल बकावत।

दुहँधा दोउ दंतुली भई अति मुख छवि पावत॥

कबहुँ कान्ह कर छाड़ि नंद पग द्वै करि धावत।

कबहुँ धरणि कर बैठि के मन महँ कछु गावत॥

कबहुँ उलटि चलै धाम को घुटरुन करि धावत ।

'सूर' श्याम मुख देखि महर मन हर्ष बढ़ावत॥

(3)

जेंवत श्याम नंद की कनियाँ।
कछुक खात कछु धरनि गिरावत छवि निरखत नंदरनियाँ॥
बरी बरा बेसन बहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनियाँ।
डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दनियाँ॥
मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छविधनियाँ।
आपुन खात नन्द मुख नावत सो सुख कहत न बनियाँ॥
जो रस नन्द यशोदा बिलसत सो नहि तिहं भुवनियाँ।
भोजन करि नन्द अँचवन कियो माँगत 'सूर' जुठनियाँ॥

(4)

खेलन अब मेरी जात बलैया।
जबहिं मोहिं देखत लरिकन संग तबहि खिझत बल भैया॥
मोसों कहत तात बसुदेव को देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे बसुदेव को करि करि जतन बटैया॥
अब बाबा कहि कहत नंद को यसुमति को कहै मैया।
ऐसेहि कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलौ सिखैया॥
पाछे नंद सुनत है ठाढ़े हँसत हँसत उर लैया।
'सूर' नंद बलिरामहि धिरयो सुनि मन हरख कन्हैया॥

(5)

मैया मैं तो चंद खिलौना लैहौं।
जैहों लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहौं॥
सुरभी कौ पयपान न करिहौं, बैनी सिर न गुहैहौं।
ह्वै हौं पूत नंद बाबा कौ, तेरो सुत न कहैहौं।
आगैं आउ, बात सुनि मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं।
हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नई दुलनियाँ दैहौं।
तेरी सौं मेरी सुनि मैया, अबहि बियावन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं॥

कवि परिचय

रामभद्राचार्य 'गिरिधर'

कवि रामभद्राचार्य 'गिरिधर' का पूरा नाम स्वामी रामभद्राचार्य है। आपका जन्म 14 जनवरी सन् 1950 को शाणीपुर, जौनपुर उ.प्र. में हुआ। दो वर्ष की अल्पायु में ही आपके नेत्रों की ज्योति सदा के लिए चली गई फिर भी आपको गीता एवं रामचरितमानस कंठस्थ हैं। आपने प्रथम कक्षा से एम.ए.तक सभी परीक्षाएँ 99 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण की हैं। यही नहीं आपने संस्कृत व्याकरण में पी.एच.डी. एवं डी.लिट. उपाधि भी प्राप्त की।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं-प्रस्थानत्रयी काव्य (संस्कृत में) भार्गव राघवीयम् महाकाव्य (संस्कृत) अरून्धती महाकाव्य (हिन्दी में) राघवगीत गुंजन, भक्तिगीत सुधा तथा अन्य 75 ग्रन्थ (हिन्दी)।

आपने जगद्‌गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट की स्थापना की है। शासन ने आपको इस विश्वविद्यालय का जीवनपर्यन्त कुलाधिपति बनाया है।

आपको राष्ट्रपति द्वारा महर्षि वेदव्यास वादरायण पुरस्कार (जीवन पर्यन्त एक लाख रुपये प्रतिवर्ष), भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार (पचास हजार रुपये), रामकृष्ण जयमान जलमिया वाणी न्यास नई दिल्ली द्वारा दो लाख का श्री वाणी अलंकरण दिया गया।

आपकी भाषा में जहाँ एक ओर शास्त्रीयता है वहीं दूसरी ओर लोक भाषा का प्रबल प्रवाह भी है। भाव के अनुसार भाषा शैली और छन्दों का प्रयोग आपकी रचनागत विशेषता है। आपके द्वारा प्रणीत 'राघव गीतगुंजन' के 'बालकांड' से वात्सल्य पद यहाँ दिए जा रहे हैं।

राम की बाललीलाएँ

(1)

राघवजू जननी अंक लसे।
प्राची दिशि जनु शरद सुधाकर, पूरन है निकसे॥
भाल तिलक सोहत श्रुति कुण्डल, दृग मनसिज सरसे।
मनहुँ इन्दु मण्डल बिच अनुपम, मन्मध बारिज से॥
कल दंत वचन कबहुँ कहुँ किलकत बिलसत दशन हँसे।
दामिनि पटधर मनहुँ नीलधन, प्रेम अमिय बरसे॥
खेलत शिशु लखि मुदित कौसिला झाँकत आँचर से।
यह शिशु छवि लखि नित 'गिरधर' हृदय नयन तरसे

(2)

राघव जननी अंक बिराजत।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु चितइ काम सत लाजत।
ललित कपोल उपर अति सोहत द्वै-द्वै असित डिठोना॥
जनु रसाल पल्लव पर बिलसत द्वै पिक तनय सलौना॥
शरद शशांक मनोहर आनन दँतुरिन लखि मन मोहे।
मनहुँ नील नीरद बिच सुन्दर चारु तड़ित तनु जोहे॥
किलकत चितइ चहूँ दिसि बिहँसत तोतरि वचन सुबोलत।
ठुमुकि ठुमुकि रुनझुन धुनि सुनि कनक अजिर शिशु डोलत॥
निरखि चपल शिशु चुटकी दै दै हँसि हँसि मातु बुलावे।
यह शिशु रूप राम लाला को 'गिरिधर' दृगनि लुभावे॥

(3)

राघव निरखि जननि सुख पावति।
सूँघि माथ रघुनाथ गोद लै प्रेम पुलकि अन्हवावति॥
पोंछि बसन पहिराइ विभूषन आशिष वचन सुनावति।
चिर जीवहु मेरे छगन मगन शिशु कहि विधि ईश मनावति।
धूरि न भरहु शीश पर लालन यों कहि तनय बुझावति॥

खेलहु अनुज सखन्ह मिलि अंगना प्रभुहिं उपाय सुझावति।

गोद राखि चुचुकारि दुलारति पुनि पालति हलरावति।

आँचर ढाँकि बदन विधु सुंदर थन पय पान करावति॥

कहति मल्हाइ खाहु कछु राघव मातु उछाइ बढ़ावति।

नजर उतारि झिगुनि जनि फेकहुँ हरिहि निहोरि बुलावति॥

देत रुचिर बहुरंग खिलौना रायहिं अजिर खिलावति।

यह झाँकी रघुवंश तिलक की 'गिरिधर' चितहिं चुरावति॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बालक कृष्ण के रुचिकर व्यंजन क्या हैं ?
2. 'मनहु नील नीरद विच सुंदर चारू तड़ित तनु जोहे' की उत्प्रेक्षा को लिखिए।
3. माता कौशल्या बालक राम की नजर उतारने के लिए क्या-क्या उपक्रम करती हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कृष्ण के बालरूप को किस प्रकार अलंकृत किया गया है?
2. प्रस्तुत पदों में बाल स्वभाव की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्रकट हुई हैं?
3. बालक कृष्ण खेलते समय कौन-कौन सी क्रीड़ाएँ करते हैं?
4. कवि रामभद्राचार्य गिरिधर के अनुसार बालक राघव की छवि का वर्णन कीजिए।
5. माता कौशल्या की प्रसन्नता को अपने शब्दों में लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बाल कृष्ण चन्द्र खिलौने लेने के लिए क्या-क्या हठ करते हैं?
2. कवि रामभद्राचार्य गिरिधर के पदों में बाल छवि का जो रूप उभरा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. वात्सल्य के पदों में बालक राम और बालक कृष्ण की समानताओं पर प्रकाश डालिए।
4. निम्नलिखित काव्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

(अ) हँसि समझावति कहति जसोमति नई दुलनियाँ दैहौं।

(आ) खेलन अब मेरी जात बलैयाँ।

जबहि मोहिं देखत लरिकन संग, तबहि खिझत बल-भैया

मौसौं कहत तात वसुदेव को, देवकी तेरी मैया।

मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि-करि जतन वटैया॥

(इ) राघव जननी अंक विराजत।
नख सिख सुभग धूरि धूसर तनु चितई काम सत लाजत।
ललित कपोल उपर अति सोहत द्वै-द्वै असित डिठौना
जनु रसाल पल्लव पर बिलसत द्वै पिक तनय सलौना।

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों में तत्सम और तद्भव शब्द पहचानकर लिखिए-
नवनीत, हिये, लिये, कपोल, अँगुरिया, धरणि, कान्ह, दधि, माखन, भैया, मैया पूरन, धूरि, गोद, शरद, माल
2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-
अ. लर लटकन मानो मत्त मधुप गन माधुरी मधुर दिये।
आ. बार-बार बकि श्याम सों कछु बोल बकावत।
इ. जो रस नन्द यशोदा बिलसत सो नहि तिंह भुवनियाँ।
ई. मनहुँ इन्दु मण्डल विच अनुपम मन्मघ वारिज से ।
उ. ठुमुकि ठुमुकि रूनझुन धुनि सुनि-सुनि कनक अजिर शिशु डोलत।
3. अधोलिखित काव्यांश में काव्य-सौन्दर्य लिखिए-
(अ) ह्वै हौं पूत नंद बाबा को, तेरो सुत न कहै हों।
आगे आऊ बात सुनि मेरी, बलदेवहिंन बतैहों।
(आ) खेलत शिशु लखि मुदित कोसिला झाँकत आँचर से।
यह शिशु छबि लखि लखि नित 'गिरिधर' हृदय नयन तरसे।
(इ) गोद सखि चुपचारि दुलारति पुनिपालति हलरावति।
आँचर ढाँकि बदन विधु सुन्दर थन पय पान करावति॥
4. ''सूर वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँक आए हैं।'' उदाहरण देकर समझाइए।
5. ''सूर की भाषा में ग्रामीण बोली का माधुर्य है।'' सूर की भाषा की विशेषताएँ लिखते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।

आइए समझिए-

'बालकृष्ण -सी देख-देख जीती सूरत अनमोली।
पहले दिन बंसी वाले करती सुनी तोतली बोली॥
बंधी हुई दोनो मुट्ठी से वैभव लल्ला लाया।
जग की आँख दबा चुंबन में वह चुपचाप चुराया॥'

इस काव्यांश में एक मात्र हृदय की सलोनी झाँकी सरलता से देखी जा सकती है। माता का पुत्र के प्रति स्नेह

भाव कितना सहज और स्वाभाविक है। काव्य से निष्पन्न यह वत्सल भाव आनन्दित वातावरण बना रहा है।

शिशुओं की क्रीड़ाओं से आह्लादित जननी-जनक के हृदय में आनन्द भावना की निष्पत्ति वात्सल्य रस कहलाती है। वात्सल्य रस का स्थायी भाव वत्सल है।

और भी जानिए

रस के चार अवयव (अंग) हैं- स्थायीभाव, संचारी भाव, विभाव और अनुभाव।

स्थायीभाव : जो भाव मानव हृदय में स्थायी रूप से रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं।

प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव रहता है। जैसे- श्रृंगार का रति, वीर का उत्साह।

संचारीभाव - ये चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकार हैं। ये स्थायी भावों को पुष्ट करने में सहायक होते हैं। इनकी स्थिति पानी के बुलबुले के समान उत्पन्न होने और समाप्त होते रहने की होती है। संचारी भावों की संख्या 33 है। कुछ प्रमुख संचारी भाव- दैन्य, मद, जड़ता विषाद, निद्रा, मोह, उग्रता, शंका, चपलता आदि हैं।

विभाव - स्थायी भावों को जाग्रत करने वाले कारक विभाव हैं। इसके दो भेद - आलम्बन और उद्दीपन है।

आलम्बन- स्थायी भाव जिन व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का आलम्बन लेकर अपने को प्रगट करते हैं, उन्हें आलम्बन कहते हैं। आलम्बन के भी दो भेद हैं-

आश्रय - जिस व्यक्ति के मन में भाव जागृत हों।

विषय- जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति भाव उत्पन्न हो।

उद्दीपन - भाव को उद्दीप्त करने वाली वस्तुएँ या चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव कहलातीं हैं।

अनुभाव- आश्रय की चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं। अनुभाव चार प्रकार के होते हैं- कायिक, मानसिक, आहार्य, सात्विक।

उदाहरणः-

जगदंबा ने बाहर आकर कहा-

नहा लो बेटा

खा पी लो थक कर आए घर जाने के दिन में लौटे हो

दुबला तन ले मुरझाया मुख

खटते औरों के हित नित

कब समझोगे अपना सुख दुख

(लोकायतन-पंत)

इसमें

रस- वात्सल्य

स्थायी भाव- वत्सल

संचारी भाव- हर्ष, चिंता

विभाव- आश्रय- जगदंबा

विषय- बेटा

उद्दीपन- दुबला तन, मुख

अनुभव - स्नेहपूर्ण कथन

6. संकलित काव्यांश से एक उदाहरण देकर उसमें निहित रस तथा उसके विभिन्न अंगों को समझाइए।
7. काव्य में माधुर्य गुण की श्रृंगार, वात्सल्य और शांत रस में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। माधुर्य गुण में मधुर शब्द योजना और सरल प्रवाह देखते ही बनता है। देखिए-कंकन किंकन नुपूर धुनि-सुनि।

   इसी प्रकार की सुन्दर, सहज, मधुर शब्द योजना के कुछ अंश इस पाठ से छाँटकर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. तुलसीदास ने 'कवितावली' और रामचरित मानस में राम की बाल छवि का मोहक वर्णन किया हैं आप 'सूर' और तुलसी के बाल-छवि वर्णन में तुलना कीजिए।
2. वात्सल्य रस से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ खोजकर पढ़िए।
3. गिरिधर कवि के 'राघव गीत गुंजन' महाकाव्य से वात्सल्य से ओतप्रोत अन्य पद पढ़िए।

शब्दार्थ

प्राची-पूर्वदिशा, **अमिय**-अमृत, **पुलकि**-प्रसन्न, **सुधाकर**-चन्द्रमा, **आँचर**-आँचल, **आशिष**-आशीर्वाद, **श्रुति**-कान, **अंक**-गोद, **अँगना**- आँगन, **मनसिज**- कामदेव, **नीरद**-बादल, **दामिनि**- बिजली, **दृगनि**- आँखों, **नवनीत**-मक्खन, **रेनु**-मिट्टी, **चारु** -सुन्दर,**कपोल**-गाल, **लट**-बालों की लटें,**केहरि**-सिंह,**राजत**-सुशोभित होता है, **अरबराई**-डगमगाकर,**कर**-हाथ, **दंतुली**-छोटे छोटे दाँत, **द्वै**-दो, **हिगावत**-धीरे धीरे चलाते हैं, **महर**- यशोदा, **जुठनियां**- जूठन (बचा खुचा खाना), **खिझत**-गुस्सा होना, **हाउ**-हौआ, **मोरी**-मरोड, **सांझ**-संध्या,**सकारे**-सुबह,**धूरि झारि**-धूल झाड़कर, **तातौ**-गरम,**परसि**-लगाकर, **सरस वसन**-सुन्दर वस्त्र, **पौढ़ाई** -लिटाकर, **सुरभी**-गाय,**जनैहो**-बताऊँगी,तेरी **सौं**-तेरी सौगंध, **बियावन**-विवाह करने,

***